



गाँधीजी और राष्ट्रभाषा हिंदी : सूक्ष्मिक संग्रह



वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

संपादन एवं समन्वय

प्रधान संपादक
प्रोफेसर अवनीश कुमार
अध्यक्ष, वैतश आयोग
निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय

संकलन एवं विशेष परामर्श
पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि
वरिष्ठ लेखक व पूर्व महा-निदेशक, प्रकाशन विभाग

संपादन
डॉ. अशोक एन. सेलवटकर
सहायक निदेशक (विषय), वैतश आयोग
श्री शिव कुमार चौधरी
सहायक निदेशक (विषय), वैतश आयोग
डॉ. शहजाद अहमद अन्सारी
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी, वैतश आयोग



महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती-वर्ष के अवसर पर^१
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित

गाँधीजी और राष्ट्रभाषा हिंदी : सूक्ति-संग्रह



सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

संकलित एवं संपादित प्रथम संस्करण, अक्तूबर 2019

प्रथम ई-संस्करण, 2019

प्रकाशक :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली-110066
फोन नं - 011-26105211
वेबसाइट - www.csttpublication.mhrd.gov.in / www.csstt.mhrd.gov.in



पुरोवाक्

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के सुअवसर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा 'गांधी जी और राष्ट्रभाषा हिंदी: सूक्ति-संग्रह' का प्रकाशन एक स्तुत्य प्रयास है। राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी के वैशिष्ट्य एवं महत्व को उद्घाटित करने वाले महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों, दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों के सूक्ति-कथनों को यह संग्रह अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत संग्रह में हिंदी के महत्व के सम्बंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महर्षि दयानन्द सरस्वती, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, विनोबा भावे, कामिल बुल्के, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. ज़ाकिर हुसैन से लेकर वर्तमान में यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी के विचारों को संग्रहित करने का व्यापक उपक्रम किया गया है।

महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती वर्ष के सुअवसर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित इस सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए मैं हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के लेखकों और शिक्षाविदों के साथ-साथ सभी पाठकों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए यह कृति प्रेरणा देगी।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')



सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा।

प्रस्तावना

भारत की संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के विकास की प्रक्रिया संविधान बनने के बहुत पहले स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही शुरू हो चुकी थी। सच तो यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल हिंदी-भाषी नेताओं ने नहीं बल्कि महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजगोपालाचारी और सुभाष चन्द्र बोस जैसे हिंदीतर भाषी महान विभूतियों की ओर से की गई। महात्मा गांधी देश-भर में अपने भाषण हिंदी या हिंदुस्तानी में ही दिया करते थे। सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की, तो विभिन्न राज्यों के सैनिकों को जोड़ने का काम हिंदी के माध्यम से ही किया। गांधीजी ने आजादी से पहले ही विभिन्न हिंदीतर भाषी राज्यों, विशेषकर दक्षिण भारत में हिंदी प्रचारिणी सभाएं बनाईं। इन सभाओं के माध्यम से हजारों हिंदी सेवी तैयार हुए जो देशभक्ति की भावना से हिंदी का प्रचार-प्रसार और शिक्षण करते थे। संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक एवं भाषायी एकता के साथ-साथ यदि एक भारत श्रेष्ठ भारत की बात करते हैं तो हिंदी भाषा, भारत की एकता, अखण्डता और श्रेष्ठता की सूत्रधार है। राष्ट्र की स्वतंत्रता से लेकर श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण में हिंदी भाषा एवं इसके साहित्य का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भारत के संविधान के भाग 17 में, धारा 343 से 351 तक राजभाषा के विषय में निर्देश है। इसी के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है तथा हिंदी के शब्द-भण्डार को विस्तृत करने के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द-ग्रहण करते हुए हिंदी भाषा की समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य निर्देशित किया गया है। भारतवर्ष के संदर्भ में ज्ञान की भाषा संस्कृत है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य में ज्ञान का अथाह भण्डार उपलब्ध है और इस ज्ञान के भण्डार का संबंध केवल भारत से ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व से है तथा मानव-सभ्यता के प्रत्येक छोटे-से-छोटे भाग पर ज्ञानात्मक साहित्य उपलब्ध है। संस्कृत भाषा से 60 प्रतिशत से भी ज्यादा शब्द हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में समाहित हैं। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास के संबंध में भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग के विविध कार्यक्रम तथा योजनाएँ हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय का मूल उद्देश्य भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए दिए गए निम्नलिखित विशेष निर्देश का अनुपालन करना है -



“संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके तथा उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ

आवश्यक या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।”

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना 1960 में तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना 1961 में की गई थी। निदेशालय का दायित्व हिंदी बर्तनी के मानकीकरण से लेकर हिंदी, भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में कोशों का निर्माण, हिंदी का प्रचार-प्रसार, स्वैच्छिक हिंदी सेवी संस्थाओं के माध्यम से हिंदी शिक्षण, प्रचार-प्रसार, हिंदी साहित्य उपलब्ध कराना मुख्य है। इसी के साथ-साथ शब्दावली आयोग वैज्ञानिक तथा तकनीकी के समस्त विषयों में हिंदी के साथ-साथ आठवीं अनुसूची में दी गई भारतीय भाषाओं के लिए मानक शब्दावली की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इसी के साथ-साथ राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों, क्षेत्रीय पाठ्य पुस्तक बोर्डों तथा राज्य अकादमियों के सहयोग से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में संदर्भ ग्रंथों/पाठ्य सामग्री का निर्माण करना भी है। जिसके अंतर्गत हिंदी तथा भारतीय भाषा ग्रंथ-अकादमियों के सहयोग से विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तकों का प्रकाशन करता है।

गांधीजी की 150वीं जयंती पर इस सूक्ति-संग्रह को प्रकाशित कर हमें हर्ष की अनुभूति हो रही है। कृति के प्रणेता पद्मश्री डॉ. शशि के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन तथा शब्दावली आयोग द्वारा इस कृति के यथा शीघ्र संपादन एवं प्रकाशन के लिए धन्यवाद। निदेशालय एवं आयोग परिवार की ओर से राष्ट्रपिता बापू की स्मृति को समर्पित यह सूक्ति-संग्रह तथा उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि ।

बापू को शत्-शत् नमन।

जय हिंदी।

प्रोफेसर अवनीश कुमार

अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग, नई दिल्ली

E-mail: dravanishkumar@gmail.com

महात्मा गाँधी, हिंदी व भारतीय भाषाएँ : संकलन तथा अभिमत्

भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है। देवनागरी लिपि में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन भी हिंदी भाषा-भाषियों ने सर्वाधिक दिया है। गाँधीजी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा व राजभाषा का दर्जा देने की घोषणा की थी। वे सभी भाषाओं की प्रोन्नति के पक्ष में भी रहे हैं। 20 अक्टूबर, 1917 को भड़ौच में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने कहा था - “अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा में कम-से-कम सोलह वर्ष लगते हैं। यदि इन्हीं विषयों की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए तो ज्यादा-से-ज्यादा दस वर्ष लगेंगे। यह राय बहुत से अनुभवी शिक्षकों ने प्रकट की है। हजारों विद्यार्थियों के छह-छह वर्ष बचाने का अर्थ यह होता है कि कई हजार वर्ष जनता को मिल गए।”



गाँधीजी ने विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की बांग्ला में लिखी ‘गीतांजली’ की प्रशंसा करते हुए बांग्ला लेखकों को स्वभाषा में लिखने की प्रेरणा दी थी। अंग्रेजी से भाषा में अनुवाद के बारे में गाँधीजी का कहना था - “जो लोग अंग्रेजी से भाषा में अनुवाद करते हैं, वे कुछ ऐसा समझते हैं कि अपनी भाषा का ज्ञान तो उनकी घुट्टी में ही उन्हें मिला है और अंग्रेजी उन्होंने पढ़ी ही है; इसलिए अब वे दो भाषाओं के पूरे पंडित हो गए। भला अब वे गुजराती का अध्ययन किसलिए करें? जब तक मन से प्रयत्न न करेंगे गुजराती कच्ची ही रहेगी; परिश्रम के बाद में पक्की होगी।”

गाँधीजी ने विश्व-भाषाएँ सीखने का विरोध कभी नहीं किया। आज हमारे प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी भी इस दृष्टि से गाँधीजी का अनुगमन करते दिखाई पड़ते हैं। उनकी मातृभाषा गुजराती है जिसमें उन्होंने यदा-कदा काव्य-सृजन भी किया है। किंतु राष्ट्रभाषा हिंदी को देश-विदेश में जितना प्रतिष्ठित उन्होंने किया है, वह अद्भुत है। देश और समाज के विकास के लिए मोदीजी गाँधीजी की तरह हिंदी को वरीयता देते हैं तथा हिंदी में अपने धाराप्रवाह भाषण से सभी को मंत्र-मुग्ध कर देते हैं। उनके हिंदी व भारतीय भाषाओं के लिए प्रतिबद्धता को सारस्वत प्रणाम!

इस सूक्ति-संग्रह में प्रकाशन विभाग, भारत सरकार के ऐतिहासिक ग्रंथ ‘संपूर्ण गाँधी वाडमय’ तथा अन्य पुस्तकों से सहयोग लिया गया है। कतिपय महानुभावों के हिंदी विषयक विचार भी प्रामाणिक ग्रंथों से संकलित किए गए हैं। (कहीं पुनरावृत्ति भी संभव है।) सभी के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन। भारत के मानव संसाधन विकास मंत्री व सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ के पुरोवाक के लिए आभार। वैज्ञानिक तथा तकनीनी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक, प्रोफेसर अवनीश कुमार को पुस्तक के यथाशीघ्र प्रकाशन के लिए धन्यवाद।

(डॉ.) श्याम सिंह शशि, पीएचडी., डी.लिट.
(हिंदी तथा अंग्रेजी में भारत के राष्ट्रपति द्वारा
पद्मश्री से सम्मानित, अनेक पुस्तकों के लेखक)

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा

- यदि हम भारत की राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।
—महात्मा गाँधी
- अगर हिंदुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।
—महात्मा गाँधी
- राष्ट्रभाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।
—महात्मा गाँधी
- देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।
—सुभाष चन्द्र बोस
- उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिंदी।
—रवीन्द्रनाथ ठाकुर
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु अनेक अनुष्ठान हुए, उनको मैं राजसूय यज्ञ समझता हूँ।
—आचार्य क्षितिज मोहन सेन
- हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है।
—राजा राममोहन राय
- हिंदी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है।
—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
- हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी।
—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
- इस बात का ध्यान सदैव रखना चाहिए कि पहले अंग्रेजी को यहाँ से हटाना है। अंग्रेजी चली गई तो उसका स्थान केवल हिंदी नहीं, सारी प्रादेशिक भाषाएँ लेंगी। अंग्रेजी के यहाँ रहते देश की अन्य भाषाएँ अपना विकास नहीं कर पाएंगी...यह भी ध्यान रखना होगा कि अंग्रेजी को तो यहाँ से जाना ही चाहिए, क्योंकि यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न है।
—पं. दीनदयाल उपाध्याय
- गाँधीजी ने हिंदी को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक उपयुक्त संवाहक के रूप में अंगीकार किया था।
—पं. दीनदयाल उपाध्याय
- हमारी कौमी जबान हिंदी ही हो सकती है।
—सरोजिनी नायडू

- राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा।
—श्रीमती महादेवी वर्मा
- हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है।
—सुमित्रानन्दन पन्त
- राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- हमारी राष्ट्रभाषा की गंगा में देशी और विदेशी सभी शब्द मिलकर एक हो जाएंगे।
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- हिंदी अपने गुणों से देश की राष्ट्रभाषा है।
—लाल बहादुर शास्त्री
- हिंदी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।
—डॉ. ग्रियर्सन
- भारत की उन्नति में एक महत्वपूर्ण मंजिल हिंदी को अंतिम रूप में राजभाषा बनाना है।
—कु. मार्गोत हेलजिंग
- चाहे कुछ भी हो, एक दिन हिंदी देश की राजभाषा बन कर रहेगी। जो हिंदी अपनायेगा वही आगे चलकर अखिल भारतीय सेवा में जा सकेगा और देश का नेतृत्व भी वही कर सकेगा, जो हिंदी जानता होगा।
—नीलम संजीव रेड्डी
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है, वह तो राष्ट्रभाषा है ही।
—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
- संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिए जाने के बाद किसी को उसके विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार नहीं है।
—कृष्ण मेनन
- राष्ट्र को राष्ट्रध्वज की तरह राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और यह स्थान हिंदी को प्राप्त है।
—अनन्त गोपाल शेवडे
- देश के विश्वविद्यालयों ने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं निभाया।
—डॉ. सम्पूर्णनन्द
- हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है उसे यथोचित सम्मान दिया जाना चाहिए।
—स्वर्ण सिंह
- भारतीय भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, कोई विदेशी भाषा नहीं।
—एम. हिदायतुल्ला

- हिंदी के लिए सेवा, लगन और बलिदान की आवश्यकता है।
—डॉ. कालूलाल श्रीमाली
- हम हिंदुस्तानियों का एक ही सूत्र रहे-हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी, हमारी राष्ट्रलिपि नागरी।
—रेहाना तैयबजी
- हिंदी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है। उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए।
—सरदार वल्लभभाई पटेल
- हिंदी राष्ट्र के सभी भागों की समान और स्वाभाविक राष्ट्रभाषा है।
—लक्ष्मण नारायण गर्ड
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रांतीय भाषाओं की हानि नहीं, वरन् लाभ है।
—अनन्त शयनम अर्यंगार
- मातृभाषा के माध्यम से ही वास्तविक लाभ संभव है।
—डॉ. आत्माराम
- राष्ट्रभाषा या राजभाषा के लिए हम भीख नहीं मांगते। यह हमारे जनतंत्री अधिकार और संविधान का आदेश है।
—नन्ददुलारे बाजपेयी
- समस्त भारतीय भाषाओं में हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।
—डॉ. भाशम
- हिंदी देश की राष्ट्रभाषा है, इसका हमें गर्व है।
—डॉ. मु.अ. अंसारी
- हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और नागरी हमारी राष्ट्रलिपि है।
—बी.के. बालकृष्ण नायर
- राष्ट्रभाषा हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।
—डॉ. राजबली पांडेय
- हिंदी सदियों से भारत की राष्ट्रभाषा है।
—अज्ञात
- मैं चाहता हूं कि भारत की राजभाषा हिंदी तेरह कोहनूरों का किरीट धारण कर भारतीय रंगमंच पर अवतीर्ण हो और मैं उसके इस रूप को इन्हीं आँखों से इसी जीवन में देख सकूं।
—ओदोलेन स्मेकल

हिंदी और राष्ट्रीय एकता

- राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।
—लोकमान्य तिलक
- भारत में एक भाषा हिंदी ही राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है।
—डॉ. ग्रियर्सन
- हिंदी एक संघटित करने वाली शक्ति है। हिंदी का प्रचार-कार्य एक वाग्यज है।
—काकासाहब गाडगिल
- हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।
—राजा राममोहन राय
- यदि कोई भाषा भारत के अधिकांश भाग में स्वीकार की जा सकती है तो वह हिंदी है।
—रमेशचन्द्र दत्त
- भारत में अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के लिए समान भाषा दर्जा हिंदी को ही दिया जा सकता है।
—डॉ. भण्डारकर
- हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।
—राहुल सांकृत्यायन
- हिंदी को भारत की एक भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज में ही एकता सम्पन्न हो सकती है।
—केशवचन्द्र सेन
- हिंदी देश के चालीस करोड़ लोगों की भाषा है। अतः उसे सहज ही अखिल भारतीय रूप प्राप्त है।
—मोटूरि सत्यनारायण
- भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार के द्वारा एकता स्थापित करने वाले लोग सच्चे भारतबंधु हैं।
—महर्षि अरविन्द
- कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक राष्ट्रभाषा हिंदी की जय हो।
—सातवलेकर
- हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
—महर्षि दयानन्द सरस्वती
- देश को एक सूत्र में बांध रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है।
—सेठ गोविन्द दास

- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
—महात्मा गाँधी
- हिंदी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।
—डॉ. गियर्सन
- प्रांतीय ईर्ष्या द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी-प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।
—सुभाष चन्द्र बोस
- मैं राष्ट्र का प्रेम, राष्ट्र के भिन्न-भिन्न लोगों का प्रेम और राष्ट्रभाषा को प्रेम, इसमें कुछ भी फर्क नहीं देखता।
—आर.आर. दिवाकर
- हिंदी और संस्कृत में समस्त भारत की आत्मा मुखरित है।
—ओदोलेन स्मेकल
- भारतीय जनता के बीच काम करने के लिए हिंदी ही एकमात्र साधन है।
—जयप्रकाश नारायण
- किसी देश को एकता के सूत्र में बांधने का सबसे स्थायी सुदृढ़ साधन उसकी भाषा है।
—राहुल सांकृत्यायन
- हिंदी भाषा उस समृद्ध जलराशि के सदृश है, जिसमें अनेक नदियां मिली हों।
—डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
- राष्ट्रव्यापी भाषा बनने की क्षमता हिंदी में सर्वाधिक है।
—आचार्य तुलसी
- राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।
—लाला लाजपत राय
- देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिंदी ही हो सकती है।
—लाल बहादुर शास्त्री
- पहले भारतीय एकता का आधार संस्कृत थी, अब यह काम केवल हिंदी ही करेगी।
—श्रीमती लीलावती मुंशी
- राष्ट्रीय एकता और विकास का आधार हिंदी ही हो सकती है।
—आर.आर. दिवाकर
- भारत की अखंडता और व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए हिंदी का प्रचार अत्यंत आवश्यक है।
—महाकवि जी. शंकर कुरुप
- मेरी मातृभाषा गुजराती है, लेकिन मुझे हिंदी बोलना नहीं आता तो, मैं लोगों तक नहीं पहुँचता।
—नरेन्द्र मोदी

- यदि मुझे विश्वास हो जाए कि हिंदी राष्ट्रीय एकता में बाधक है तो हिंदी को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा।

—सेठ गोविन्द दास
- हिंदी देश की गंगा है।

—राम कुमार भुवालका
- हिंदी के बिना जनतंत्र की बात केवल धोखा मात्र है।

—अम्बिका प्रसाद बाजपेयी
- हिंदी को राष्ट्र का विकास करने के लिए बहुत कुछ करना है।

—बाबूराव विष्णु पराड़कर
- उत्तर और दक्षिण भारत का सेतु हिंदी ही हो सकती है।

—प्रो. चन्द्रहासन
- यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
- अमरभारती की इस लाडली “हिंदी” के स्वरों में भारत की राष्ट्रीय आत्मा बोलती है।

—डॉ. सम्पूर्णनन्द
- देश की भाषा को अपनाये बिना समृद्धि संभव नहीं।

—श्रीमती महादेवी वर्मा
- हमारे मन में राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा होनी चाहिए।

—वियोगी हरि
- हिंदी को अपनाए बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं।

—आचार्य कृपलानी
- राष्ट्रभाषा न रहते हुए भी हिंदी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक होगी।

—डॉ. सम्पूर्णनन्द
- हिंदी का आंदोलन भारतीयता का आंदोलन है।

—गो. पं. नेने
- हिंदी के बिना भारत की राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है।

—वी.वी. गिरि
- हिमालय से कुमारी अन्तरीप तक के निवासियों के लिए एक भाषा और एक लिपि का होना जरूरी है।

—बाबू शारदाचरण मित्र
- हिंदी ही देश को एक सूत्र में बांधने में समर्थ है।

—काकासाहब गाडगिल

- भारत की भावात्मक एकता का साधन हिंदी ही हो सकती है।

—बैरन हालैण्ड

- संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री हिंदी भारतीय एकता का आधार है।

—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

- एक भाषा के बिना भारत में एकता नहीं हो सकती और वह भाषा हिंदी है।

—केशवचन्द्र सेन

- हिंदी देश की एकता की एक ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

—श्रीमती इन्दिरा गांधी

- भारत की एकता चाहने वालों को हिंदी अपनानी ही पड़ेगी।

—जे. वेकट रामन

- जब एक प्रांत के लोग दूसरे प्रांत से मिलें तो परस्पर वार्तालाप हिंदी में ही होना चाहिए।

—लोकमान्य तिलक

- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

—महात्मा गांधी

- हिंदी को भारत की एक भाषा स्वीकार कर लिया जाए तो सहज में ही एकता संपन्न हो सकती है।

—केशवचन्द्र सेन

- हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

- हिंदी ही हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का सबसे शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है।

—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

- हिंदी देश की एकता की कड़ी है।

—डॉ. जाकिर हुसैन

- हिंदी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य,
यों तो रूस और अमरीका, जितना है उसका जन राज्य।
बिना राष्ट्रभाषा स्वराष्ट्र की, गिरा आप गूँगी असमर्थ,
एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ।

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

- राष्ट्रीय एकता का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हिंदी है।

—डॉ. जाकिर हुसैन

- राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।

—लाला लाजपत राय

- हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सूजन करेगी।

—डॉ. जाकिर हुसैन

हिंदी जन-जन की भाषा

- उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिंदी।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

- हिंदी एक जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी उतना लाभ होगा।

—पं. जवाहरलाल नेहरू

- सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है।

—लोकमान्य तिलक

- राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

—सरदार वल्लभभाई पटेल

- मेरी आँखें उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक ही भाषा को समझने और बोलने लगेंगे।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

- सब लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें।

—महर्षि अरविन्द

- जब एक प्रांत के लोग दूसरे प्रांत से मिलें, तो परस्पर वार्तालाप हिंदी में ही होना चाहिए।

—लोकमान्य तिलक

- हिंदी भाषा के द्वारा भारत के अधिकांश स्थानों का मंगल साधन करें।

—बंकिमचन्द्र चटर्जी

- हिंदी सारे देश में समझी जाने वाली भाषा है।

—सर मिर्जा इस्माइल

- देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा-पद की अधिकारिणी है।

—सुभाषचन्द्र बोस

- अब भी मैं वही कहता हूँ जो पहले कहता था कि हिंदी सबको सीखनी चाहिए।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

- यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है तो वह जनता की भाषा में ही चलाना होगा।

—काका कालेलकर

- हिंदी ही देश की संपर्क भाषा हो सकती है। इसमें दो मत नहीं।
—टो. एस. भर्डे
- उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतीयों के साथ हिंदी में वार्तालाप करूँगा।
—शारदाचरण मित्र
- यदि भारत की किसी भाषा को सर्वसाधारण की भाषा माना जाए तो वह हिंदी है।
—बंगाल मैगजीन, सन् 1874
- भारतीय जनता के बीच काम करने के लिए हिंदी ही एकमात्र साधन है।
—अज्ञात

विश्व भाषा हिंदी

- हिंदी, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है।
—डॉ. प्रभाकर माचवे
- लगभग सौ वर्षों से फिजी में हिंदी चल रही है।
—रामनारायण गोविन्द (फिजी)
- हिंदी में विश्व की संपर्क भाषा बनने की क्षमता है।
—भगवान सिंह
- वह दिन आयेगा, जब हिंदी एशिया की प्रमुख भाषा होगी।
—काका कालेलकर
- हिंदी का रामचरित मानस विश्व-साहित्य में अद्वितीय है।
—डॉ. कामिल बुल्के
- हिंदी विश्व की सर्वाधिक संपन्न भाषा संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री है।
—आचार्य विनोबा भावे
- मारिशस के गांव-गांव में रामचरित मानस द्वारा हिंदी की शिक्षा दी जाती है।
—रवीन्द्र घरबरन (मारिशस के पूर्व उच्चायुक्त)
- मारिशस में हिंदी की मंदाकिनी बहती है।
—सोमदत्त बखौरी (मारिशस)
- तुलसीदास भारत नहीं विश्व के महान कवि हैं।
—अलीम केशो कवि (रूस)
- एक दिन हिंदी एशिया नहीं विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।
—गणेश शंकर विद्यार्थी

- हम मारिशस को अपनी जन्म-भूमि मानते हैं, किंतु हिंदी को अपनी माँ।
—सोमदत्त बखौरी (मारिशस)
- हिंदी विश्व की महान भाषा है।
—राहुल सांकृत्यायन
- हिंदी विश्व की सरलतम भाषाओं में है।
—आचार्य क्षितिज मोहन सेन
- हिंदी उन सभी गुणों अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।
—मैथिलीशरण गुप्त
- सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है।
—डॉ. अमरनाथ झा

देवनागरी लिपि

- मानव के मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमालाओं में “नागरी” सबसे अधिक पूर्ण वर्णमाला है। नहीं।
—जान क्राइस्ट
- देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।
—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
- संसार में यदि कोई सर्वांगपूर्ण अक्षर हैं तो देवनागरी के हैं।
—आइजक पिटमैन
- भारत की एकता के लिए आवश्यक है कि देश की सभी भाषाएं नागरी लिपि अपनाएं।
—आचार्य विनोबा भावे
- देवनागरी अक्षरों से बढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं हैं।
—प्रो. मोनियर विलियम्स
- देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।
—राहुल सांकृत्यायन
- देवनागरी भारत के लिए वरदान है।
—आचार्य विनोबा भावे
- नागरी लिपि में सभी भारतीय भाषाएं लिखी जाने पर उनमें भेद की दीवार समाप्त हो जाएगी।
—अज्ञेय
- राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा से कहीं बढ़कर एक लिपि का प्रचार होना है।
—ब्रजनन्दन सहाय

- नागरी वर्णमाला के समान सर्वांगपूर्ण और वैज्ञानिक कोई वर्णमाला नहीं।
—बाबूराव विष्णु पराड़कर
- अखिल भारतीय कार्यों के लिए एक समान लिपि के रूप में देवनागरी का ही समर्थन किया जा सकता है।
—डॉक्टर बी. राघवन
- सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई सामान्य लिपि हो सकती है तो वह देवनागरी है।
—गोविन्द मेनन
- नागरी लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में पायी नहीं।
—आचार्य विनोबा भावे
- देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा अन्य किसी भाषा की तुलना में अधिक व्यवस्थित है।
—अज्ञात
- देवनागरी लिपि में उसकी ऐतिहासिक महत्ता के अतिरिक्त और भी विशेष गुण हैं।
—सुनीति कुमार चाटुर्ज्या
- देवनागरी भारतीय भाषाओं के लिए सर्वोत्तम लिपि है।
—अज्ञात

हिंदी बनाम अंग्रेजी

- अंग्रेजी यहां दासी या अतिथि के रूप में ही रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं।
—कामिल बुल्के
- राज्य का सब काम अंग्रेजी में चलाना जनता पर एक बोझ लादना है।
—काका कालेलकर
- अंग्रेजी उस वनस्पति के समाम है, जिसकी जड़ तो कट चुकी है किंतु पत्तियां अभी हरी हैं।
—लक्ष्मीनारायण “सुधांशु”
- मैं मानता हूँ कि हिंदी में, हमारी दासता की प्रतीक अंग्रेजी को बाहर निकालने की क्षमता है।
—डॉ. श्यामसुन्दर दास
- अंग्रेजी का मुखापेक्षी रहना भारतीयों के लिए किसी भी प्रकार शोभाजनक नहीं है।
—आस्कर गोविन्द घाणेकर
- अंग्रेजी इस देश के लिए अभिशाप है।
—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार
- हिंदी में अभिव्यक्ति की ऐसी सामर्थ्य है, जो अंग्रेजी से किसी प्रकार कम नहीं है।
—सन् 1901 की भारतीय जनगणना रिपोर्ट, पृष्ठ-307

- अंग्रेजी भारत के राजकाज या व्यवहार की भाषा नहीं हो सकती।
—काका कालेलकर
- आज की अंग्रेजी शिक्षा ने हमें निकम्मा और नकलची बना दिया है।
—महात्मा गाँधी
- प्रत्येक भारतीय को हिंदी सीखनी चाहिए।
—श्यामाप्रसाद मुखर्जी
- अंग्रेजी भाषा के “गेजुएट” बनने का महामोह शिक्षा के लिए सचमुच साढेसाती का “शनैश्चर” है।
—पदमसिंह शर्मा
- अंग्रेजी के चले जाने के बाद अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह रखना विस्मय की बात है।
—विजयलक्ष्मी पण्डित
- जिसके प्रति हमारी जनता का हृदय फट चुका है, उसकी भाषा अंग्रेजी के प्रति अपना मोह हमें छोड़ देना चाहिए।
—राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’
- भारत अंग्रेजी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा मानने के लिए तैयार नहीं।
—राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’
- अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा समाप्त होनी चाहिए।
—पं. सीताराम चतुर्वेदी
- केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है, उतने श्रम में हिंदुस्तान की सभी भाषाएं सीखी जा सकती हैं।
—आचार्य विनोबा भावे
- अंग्रेजी को हटाए बिना हिंदी अपने न्यायोचित स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।
—जगजीवन राम
- अंग्रेजी और हिंदी को साथ-साथ रखना बाघ और बकरी को एक साथ बैठाना है।
—गंगाशरण सिंह
- विदेशों से संपर्क के लिए हिंदी माध्यम हो। अंग्रेजी के कारण विदेशों में हमें लज्जित होना पड़ता है।
—नम्बूतिरिपाद
- अंग्रेजी के प्रभुत्व को भारत से समाप्त करने के लिए क्रांति की जरूरत है।
—प्रकाशवीर शास्त्री
- जब तक अंग्रेजी नहीं जाती, हिंदी अपना स्थान नहीं ग्रहण कर सकती।
—यशपाल
- अंग्रेजी को बनाए रखने की नीति मानसिक दासता की द्योतक है।
—जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ

- अंग्रेजी सदैव के लिए शिक्षा का माध्यम नहीं रह सकती।
—डॉ. जाकिर हुसैन
- अंग्रेजी के अंधभक्त इस देश की धरती को छोड़कर इंग्लैंड या अमेरिका चले जाएं।
—पी. जान
- अंग्रेजी को समाप्त करने से ही वर्तमान भाषा समस्या समाप्त होगी।
—युगल किशोर चतुर्वेदी
- संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।
—डॉ. कामिल बुल्के
- विदेशी भाषा अंग्रेजी द्वारा हम भारत के गांवों से कोई संबंध नहीं जोड़ सकते। यह काम हिंदी ही कर सकती है।
—श्रीमती लोकसुन्दरी रामन
- अंग्रेजी का माध्यम भारतीयों की शिक्षा में सबसे बड़ा कठिन विध्न है।
—महामना मालवीय
- अंग्रेजी के रहते भारतीयों का मानसिक विकास संभव नहीं है।
—सेठ गोविन्ददास
- अब भी अंग्रेजी को राजभाषा बनाए रखने का आग्रह दासता के अभिशाप का अवशेष है।
—राहुल सांकृत्यायन
- अंग्रेजी को पहले की तरह प्राथमिकता देना संभव नहीं है।
—के. के. शाह
- भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी को स्थान देना उचित नहीं है।
—महाकवि जी. शंकर कुरुप
- अंग्रेजी के माध्यम से भारतीय संस्कृति का उत्थान संभव नहीं।
—कालिन्दीचरण पाणिग्रही
- हिंदी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा के साथ नहीं, बल्कि अंग्रेजी के साथ है।
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- दो प्रतिशत लोगों की भाषा राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। हिंदी ही इसके लिए सर्वथा उपयुक्त है।
—एस. सत्यमूर्ति
- अंग्रेजी विकल्प के रहते हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति संभव नहीं है।
—डॉ. नगेन्द्र
- “दुनिया से कह दो : गाँधी अंग्रेजी नहीं जानता।”
—महात्मा गाँधी

- अंग्रेजी की गुलामी विश्व-भर में केवल भारत में है।

—रामेश्वर टांटिया

- सचमुच उस समय मेरी आँखें भर आती हैं, जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं।

—महादेवी वर्मा

- विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जो विदेशी भाषा के बल पर जीना चाहता है।

—काका कालेलकर

- शिक्षा में अंग्रेजी का बढ़ता प्रयोग चिंतनीय है।

—अज्ञेय

- विदेशी भाषा किसी स्वतंत्र राष्ट्र के कामकाज की भाषा नहीं हो सकती। यह दासता ही है।

—वाल्टर चेनिंग

- आज अंग्रेजी संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। किसी दिन यह कार्य हिंदी करेगी तथा उसके लिए हमें पूर्ण ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करना होगा।

—एम. सी. छागला

हिंदी बनाम उर्दू

- हिंदी और उर्दू को दो भिन्न भाषाएं समझना एक बहुत बड़ी गलतफहमी है।

—डॉ. बीम्स

- यदि लिपि का बखेड़ा हट जाए तो हिंदी उर्दू में कोई विवाद ही न हो।

—ब्रजनन्दन सहाय

- हिंदी और उर्दू की जड़ एक है। अगर हम चाहें तो दोनों को एक बना सकते हैं।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

- उर्दू भाषा नहीं, एक वृत्ति है, शैली है।

—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

- उर्दू हिंदी का ही एक बड़ा रूप है, फारसी मिश्रित रूप।

—मौ. जफर अली

हिंदी एवं अन्य भाषाएं

- हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सबकी सहोदरा है।

—महादेवी वर्मा

- पहले हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं संपन्न हो जाएं, तब अंग्रेजी हटाई जाए, यह तर्क वैज्ञानिक नहीं है।
—डॉ. धीरेंद्र वर्मा
- हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रांतीय भाषाओं को हानि नहीं, वरन् लाभ है।
—अनन्त शश्नम अच्यंगार
- मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।
—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय
- भारतीय भाषाओं में कोई भी मानवीय भावना व्यक्त करने की पूर्ण सामर्थ्य है।
—श्री क्रस्थ
- हिंदी किसी भी अन्य भाषा से द्वेष नहीं रखती।
—शिवपूजन सहाय
- प्रांतीय भाषाओं के क्षेत्र पर जरा भी हमला किए बिना आपस के व्यवहार के लिए हमारा अखिल भारतीय माध्यम (हिंदी) होना चाहिए।
—जवाहरलाल नेहरू
- यह कथन अतिरिंजित है कि दक्षिण में हिंदी का विरोध है। आज दक्षिण के अधिक लोग हिंदी पढ़ रहे हैं।
—काकासाहब गाडगिल
- हिंदी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगी।
—डॉ. जाकिर हुसैन
- यह कथन गलत है कि दक्षिण भारत के लोग हिंदी सीखना नहीं चाहते।
—श्री कामराज
- राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में दक्षिण भारतीयों ने बहुत बड़ा योगदान किया है।
—स. का. पाटिल
- क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाने के जोश में संपर्क भाषा हिंदी के विकास की उपेक्षा नहीं की जाना चाहिए।
—डॉ. वी. गोपाल रेड्डी
- हिंदी के द्वारा सभी प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति होगी, यह मेरा दृढ़ मत है।
—डॉ. सु. शैकरर नायडू
- हिंदी की होड़ किसी प्रांतीय भाषा के साथ नहीं, बल्कि अंग्रेजी के साथ है।
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- यदि हमारा विश्वास हमारी भाषाओं पर से उठ गया हो तो वह इस बात की निशानी है कि हमारा अपने आप पर विश्वास नहीं रहा। यहां हमारी गिरी हुई हालत की निशानी है और जो भाषाएं हमारी

माताएं बोलती हैं उनके लिए हमें जरा भी मान न हो तो किसी तरह की स्वराज्य की योजना, भले ही वह कितनी भी परोपकारी वृत्ति या उदारता से हमें दी जाए, हमें कभी स्वराज्य भोगने वाली पूजा नहीं बना सकेगी।

—महात्मा गाँधी

- अस्सी प्रतिशत दक्षिणवासियों का हिंदी के प्रति सम्मान भाव है।

—डॉ. राजगोपालन

हिंदी का महत्व

- हिंदी सारे देश में समझी जाने वाली भाषा है।

—सर मिर्जा इस्माइल

- हिंदी की प्रगति को कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

—आचार्य विनोबा भावे

- हिंदी भारत के लिए प्रकृति का वरदान है।

—गिरिधर शर्मा

- हिंदी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनना होगा।

—आचार्य विनोबा भावे

- हिंदी भाषा उस समृद्ध जलराशि के सदृश है, जिसमें अनेक नदियां मिली हों।

—डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

- हिंदी के विरोध का कोई भी आंदोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।

—सुभाषचन्द्र बोस

- हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।

—माखनलाल चतुर्वेदी

- हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है।

—सुमित्रानन्दन पन्त

- मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।

—आचार्य विनोबा भावे

- एक दिन हम देखेंगे कि देश के सभी काम हिंदी में हो रहे हैं।

—एन.के. पद्मनाभन

- भाषा और संस्कृति से खिलवाड़ करने वाले राजनीतिज्ञ आते हैं, चले जाते हैं। ये राजनीतिज्ञ आज हैं और कल नहीं रहेंगे, किंतु भारतीय संस्कृति की प्रतीक हिंदी सदा अमर रहेगी।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

- हिंदी को देश में परस्पर संपर्क भाषा बनाने का कोई विकल्प नहीं, अंग्रेजी कभी भी जन-भाषा नहीं बन सकती।

—मोरारजी देसाई
- हिंदी के माध्यम से भारतीय विचारों से परिचित हो जाने से मैं अपने आपको धनी और हर प्रकार से स्वतंत्र अनुभव करता हूँ।

—ओदोलेन स्मेकल
- मैं हिंदी का प्रेमी हूँ। सांस्कृतिक जीवन में हिंदी के महत्व को भली भांति समझता हूँ। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिंदी ही बन चुकी है। इसलिए भारतीय राष्ट्र के विरोधी हिंदी के विरोध में अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं।

—डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या
- हिंदी के बिना जनतंत्र की बात केवल धोखा मात्र है।

—अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
- हिंदी की शक्ति पर अविश्वास करना धोखा है। उसमें असीम शक्ति है।

—डॉ. बाबूराम सक्सेना

निज भाषा उन्नति अहै

- सभ्य संसार के किसी भी जन-समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

—महामना मालवीय
- कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

—महात्मा गांधी
- हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचता है और दढ़ करती है।

—राजर्षि टण्डन
- हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का कभी बहिष्कार नहीं किया।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- हिंदी भाषा को भारतीय जनता तथा मानवता के लिए बहुत बड़ा उत्तरदायित्व संभालना है।

—डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या
- हिंदी साहित्य धर्म अर्थ-काम-मोक्ष—इस चतुःपुरुषार्थ का साधन है अतएव जनोपयोगी है।

—डॉ. भगवान दास
- हिंदी किसी के मिटाने से मिट नहीं सकती।

—आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय

- सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है।
—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- मेरी समझ में हिंदी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए।
—लोकमान्य तिलक
- हिंदी आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अंग है।
—सेठ गोविन्द दास
- किसी विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा का माध्यम होना, सांस्कृतिक दासता है।
—वाल्टेर चेनिंग
- आज अंग्रेजी भाषा एक विशिष्ट सामाजिक वर्ग की स्वार्थ संपन्नता का कारण बन गई है।
—निशिनाथ चक्रवर्ती
- हिंदी भारत के लिए प्रकृति का वरदान है।
—पं. गिरिधर शर्मा
- कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा-सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है।
—थामस डेविड
- जो मुद्दी-भर लोग हिंदी का विरोध करते हैं, वे नौकरियों और अधिकारों को अपने हाथ में रखने के स्वार्थवश ऐसा करते हैं।
—माधव श्रीहरि अणे
- मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि हम अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी भाषा के अध्ययन में लगाएं।
—आचार्य विनोबा भावे
- प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का प्रतिबिंब है।
—रामचन्द्र शुक्ल
- किसी साहित्य की नकल करने पर कोई साहित्य नहीं तैयार होता।
—महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।
—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय
- हिंदी का आंदोलन समूचे देश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने का संकल्प है।
—डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
- जो भाषा दूसरी भाषाओं की सहायता नहीं लेती, वह बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह सकती।
—पांडेय रामावतार शर्मा

- भारतीय भाषाओं में कोई भी मानवीय भावना व्यक्त करने की पूर्ण सामर्थ्य है।

—क्रस्थ

- राष्ट्रभाषा की साधना कोरी भावुकता नहीं।

—जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

- हिंदी, नागरी और राष्ट्रीयता परस्पर अन्योन्याश्रित हैं।

—नन्ददुलारे बाजपेयी

- हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, इसमें कोई संदेह नहीं।

—अनन्तगोपाल शेवडे

- जिस राष्ट्र की जो भाषा है, उसे हटाकर दूसरे देश की भाषा की जनता पर नहीं थोपा जा सकता।

—डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

- हिंदी ऐसी स्वच्छ, सुस्पष्ट, सरलतर,
जिसके सम नहीं है कोई भाषा भूतल पर।

—माधव शुक्ल

- हिंदी प्रेम की भाषा है।

—श्रीमती महादेवी वर्मा

- मेरे लिए हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

—राजर्षि टंडन

- भाषा जिस तरह बोली जाय, उसी तरह लिखी भी जाय। बनावटी भाषा, भाषा नहीं।

—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

- हिंदी भारत की अमरवाणी है, यह स्वतंत्रता और संप्रभुता की गरिमा है।

—माखन लाल चतुर्वेदी

- राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ गहरा संबंध है।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

- निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

- यदि हिंदी की उन्नति नहीं होती है तो यह देश का दुर्भाग्य है।

—बंकिमचन्द्र चटर्जी

- भारतीय धर्म की है घोषणा घमंड भरी,
हिंदी नहीं जाने उसे हिंदी नहीं जानिए।

—नाथूराम शंकर शर्मा

- राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्रीय चरित्र, उन्नतिशीलता तथा योग्यता का दर्पण है।

—ओदोलेन स्मेकल

- संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को उतना ऊँचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने तथा संसार को सभ्य बनाने में उतनी सफल नहीं हुई, जितनी आगे चलकर हिंदी होगी।
—गणेश शंकर विद्यार्थी
- विदेशी शिक्षा ने भारतीयों को अयोग्य बना दिया॥
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- प्रत्येक भारतीय बालक को पहले तीन वर्ष तक हिंदी के अतिरिक्त और किसी भाषा की शिक्षा नहीं पानी चाहिए।
—एस. सत्यमूर्ति
- देश की समस्याएं तभी हल होंगी, जब उसका सब कामकाज हिंदी में होने लगेगा।
—डॉ. हरेकृष्ण मेहताब
- हिंदी की प्रगति को कोई शक्ति रोक नहीं सकती।
—आचार्य विनोबा भावे
- भारत में अंग्रेजी भाषा के प्रसार का उद्देश्य भारत की राजनीतिक, सैद्धांतिक तथा आर्थिक गुलामी को मजबूत करना था।
—प्योतर वारान्निकोव
- कोई भी देश अपनी भाषा, संस्कृति की उपेक्षा करके उन्नति नहीं कर सकता।
—कुशोक बकुल
- हिंदी एक अत्यंत शक्तिशाली भाषा है।
—डॉ. कामिल बुल्के
- हिंदी को शीघ्र से शीघ्र विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए।
—डॉ. नगेन्द्र
- हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुंचा जा सकता।
—डॉ. लोथर (जर्मनी)
- दुनिया-भर में भारत को छोड़कर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा, जहाँ एक विदेशी भाषा माध्यम से शिक्षा दी जाती है।
—महाकवि पी. कुंजि
- मैंने हिंदी का कोई अध्ययन नहीं किया है, फिर भी मुझे हिंदी बोलने-पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होती।
—यशवन्तराव चहवाण
- वे हिंदी भाषी चुल्लू भर पानी में डूब मरें जो अपने जातीय संस्कारों और पारिवारिक उत्सवों में भी अंग्रेजी की गुलामी ढोते रहने में मिथ्या दंभ का प्रदर्शन करते हैं।
—अज्ञात

- जो लोग इस देश की भाषा में इस देश का राजकाज नहीं कर सकते, वे कुर्सी छोड़ दें।
—लक्ष्मीनारायण सुधांशु
- राजभाषा के रूप में विदेशी भाषा का प्रयोग मानसिक पराधीनता है। हिंदी का शब्दकोश अंग्रेजी से तीन गुना है। {हिंदी प्रचार परिषद योरूप (लंदन) का प्रस्ताव : दिसम्बर, 1968।}
—वाल्टेर चेनिंग
- विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा की हिमायत करने वाले जनता के दुश्मन हैं।
—महात्मा गाँधी
- मेरा दृढ़ मत है कि अंग्रेजी के प्रति लोगों का मनोवैज्ञानिक लगाव अब खत्म होना चाहिए।
—जवाहरलाल नेहरू
- भाषा के क्षेत्र में घृणा नहीं, प्रेम और सौहार्द का स्थान रहा करता है।
—का. ना. सुब्रह्मण्यम
- भाषा की समस्या साहित्यकार और लेखक दूर कर सकते हैं।
—कमलापति त्रिपाठी
- तमिलनाडु में हिंदी-विरोध कुछ लोगों का फैशन है।
—न. ई. मुट्टूस्वामी
- हिंदी सीखने का कार्य ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को राष्ट्रहित में करना चाहिए।
—एनी बेसेन्ट
- जब तक आपके देश का कार्य और शिक्षा का प्रसार हिंदी के माध्यम से नहीं होगा, यह देश वास्तविक उन्नति नहीं कर सकता।
—डॉ. मे. पी. चेलिशोव : (मास्को)
- हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य के अभाव का नारा भ्रामक है।
—पीताम्बर दास
- जो जाति अपनी भाषा को भुला देती है वह दुनिया से समाप्त हो जाती है।
—बादशाह खान
- भारत की परम्परा भाषाओं में जीती है।
—राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर
- हिंदी मेरी जीवनचर्या है।
—सुधाकर पाण्डेय
- भारतीय जनतंत्र का सैद्धांतिक पक्ष बिना हिंदी के अपूर्ण है।
—सेठ गोविन्द दास
- मद्रास हिंदी प्रेमी साहित्यकारों और रचनाकारों का केंद्र भी है।
—हेमलता अंजुनेयुलु

- हिंदी व्याकरण आधुनिक जीवन की मांगों के अनुरूप है।
—कुमारी मार्गरेट शैलनिक (जर्मनी)
- किसी राष्ट्र और जाति की आत्मा को प्रकट करने के लिए एक भाषा और एक लिपि का होना अनिवार्य है।
—गोविन्द शंकर कुरुप
- आनंद प्रदेश हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से सजग है।
—एम. आर. नागम
- केरल को अपने-हिंदी प्रेम पर गर्व है।
—एस. लक्ष्मण शास्त्री
- हिंदी का पौधा दक्षिण वालों ने अपने त्याग से सींचा है।
—शंकरराव कम्पोकिरी
- हिंदी प्रचार का कार्य देशभक्ति का कार्य है।
—गंगाशरण सिंह
- हिंदुस्तान की सभी भाषाएं, जिनमें जो उत्तम चीजें हैं, उनको हमें समय-समय पर हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाने का प्रयास करना चाहिए और यह अविरल प्रक्रिया चलती रहे।
—नरेन्द्र मोदी



The screenshot shows the official website of the Commission for Scientific & Technical Terminology (CSTT) of India. The header features the CSTT logo, the name 'CSTT' in large letters, and the tagline 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' (Commission For Scientific & Technical Terminology). It also displays the date '26 Sep 19 | 12:03 23PM', the URL 'csttpublication.mhrd.gov.in/english/', and navigation links for 'Zoom', 'Website Version', and language selection ('English हिंदी'). A portrait of Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank', Minister of Human Resource Development, is shown. The main menu includes 'HOME', 'ABOUT US', 'GLOSSARY', 'DEFINITIONAL DICTIONARY', 'BOOKS', 'E-JOURNALS', 'PHOTO GALLERY', 'DOWNLOADS', and 'CONTACT US'. Below the menu, four book covers are displayed: 'रसायन शिक्षार्थी शब्द संग्रह' (Chemistry Learners Glossary), 'प्राकृतिक विपदा शब्दावली' (GLOSSARY OF NATURAL DISASTER TERMS), 'आयुर्विज्ञान परिभाषा कोश शल्यविज्ञान' (Definition Dictionary of Surgical Terms), and 'वृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह प्राणिविज्ञान' (Comprehensive Glossary of Zoology).



वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110066.

Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
West Block-7, R.K. Puram, New Delhi - 110066.
 011-26105211 • Website: www.cstt.mhrd.gov.in
www.csttpublication.mhrd.gov.in
Mobile App: "CSTT Publication"